

समकालीन विमर्श के संदर्भ में दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य में मध्यवर्गीय अलगाव और अस्तित्ववादी संकट का अध्ययन

निखिल कुमार सिंह

शोधार्थी,

हिन्दी विभाग,

कामता प्रसाद मुंदर लाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, उत्तरप्रदेश

सारांश -

दूधनाथ सिंह (1936-2018) साठोत्तरी हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने अकहानी आंदोलन के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की गहन विडंबनाओं, अलगाव की भावना और अस्तित्ववादी संकट को अपनी रचनाओं में उकेरा है। उनका लेखन व्यक्तिवादी-अस्तित्ववादी दृष्टि से युक्त है, जहाँ आर्थिक-सामाजिक प्रगति के बावजूद आंतरिक खालीपन, संबंधों का क्षय, समय की व्यर्थता और अर्थहीनता का बोलबाला है। यह शोध पत्र समकालीन विमर्शों—जैसे सार्ववादी अस्तित्ववाद (अस्तित्व सार से पहले है) तथा उत्तर-आधुनिक अलगाव—के परिप्रेक्ष्य में दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य का पुनर्मूल्यांकन करता है।

प्रमुख कहानियों जैसे 'सुखांत', 'चूहेदानी', 'रीछ' और 'नपनी' में मध्यवर्गीय पात्रों का चित्रण किया गया है, जो बाहरी सफलता के बीच आंतरिक अलगाव और अस्तित्व की अर्थहीनता से जूझते हैं। 'सुखांत' में संबंधों का अंत और सुख की व्यर्थता को दर्शाया गया है, जहाँ पात्र आंतरिक दुविधा में फँसा रहता है ("मेरी तबीयत खराब है? मुझे क्या हुआ है...") 'चूहेदानी' में पात्र का जीवन चूहों जैसा यांत्रिक और फँसा हुआ दिखता है, जहाँ वह कब्रगाहों और ठंडी रातों के बीच अकेलापन महसूस करता है, जो मध्यवर्गीय अलगाव का प्रतीक है। 'रीछ' में खूँखार संघर्ष और अचानक आने वाले खतरे से पात्र का अकेलापन उभरता है, जो सामाजिक दबाव से अलगाव को दर्शाता है। 'नपनी' में मध्यवर्गीय दहेज-प्रथा और स्त्री को वस्तु बनाने की सोच पर व्यंग्य है, जहाँ लड़की की लंबाई नापी जाती है ("तुम्हें भइआ ने फीते से ठीक से नापा था न?... नपनी पास आकर खड़ी हुई - एक साँवली सी, दुबली सी, मरी-मरी लड़की")—यहाँ अलगाव लैंगिक और सामाजिक स्तर पर प्रकट होता है।

शोध से निष्कर्ष निकलता है कि दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य मध्यवर्गीय अलगाव को अस्तित्ववादी संकट के रूप में प्रस्तुत करता है, जो आज के डिजिटल युग, मानसिक स्वास्थ्य संकट और संबंधों के क्षय के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। उनका लेखन व्यंग्य और सूक्ष्म मनोविश्लेषण से मध्यवर्ग की पोल खोलता है, तथा सार्थकता की खोज में व्यर्थता की ओर इशारा करता है। यह अध्ययन हिंदी कथा-साहित्य में उनके योगदान को समकालीन विमर्शों से जोड़कर नया आयाम प्रदान करता है।

कीवर्ड्स - दूधनाथ सिंह, मध्यवर्गीय अलगाव, अस्तित्ववादी संकट, साठोत्तरी कहानी, अकहानी, समय और संबंध का अंधेरा, सुखांत, रीछ

प्रस्तावना -

हिंदी कथा-साहित्य में साठ के दशक के बाद उभरी पीढ़ी को साठोत्तरी कहा जाता है, जो नई कहानी आंदोलन के बाद के मोहभंग, सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल और व्यक्तिगत अलगाव की गहन अनुभूति से युक्त थी। इस दौर में अकहानी आंदोलन ने कहानी को नई दिशा दी, जिसमें पारंपरिक कथानक, नाटकीयता और सामाजिक यथार्थवाद की जगह व्यक्तिवादी, मनोवैज्ञानिक गहराई, विडंबना और अस्तित्ववादी संकट को प्रमुखता मिली। इस आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षरों में दूधनाथ सिंह का नाम अग्रणी है, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की आंतरिक विडंबनाओं, संबंधों के क्षय और समय की व्यर्थता को सूक्ष्म व्यंग्य एवं मनोविश्लेषणात्मक शैली में उकेरा।

दूधनाथ सिंह का जन्म 17 अक्टूबर 1936 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के सोबंथा गाँव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। अल्पायु में ही माता-पिता को खो देने के कारण उनका बचपन तन्हाई में बीता, जो उनकी रचनाओं में बार-बार उभरने वाले अकेलेपन और अलगाव की भावना का मूल स्रोत प्रतीत होता है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए. किया और कुछ समय कलकत्ता में अध्यापन के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक रहे। उनका निधन 11 जनवरी 2018 को

इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में हुआ।

उनकी प्रमुख कृतियाँ कहानी संग्रहों में शामिल हैं—**सपाट चेहरे वाला आदमी** (1967), **सुखांत** (1972), **प्रेमकथा का अंत न कोई** (1992), **माई का शोकगीत** (1992), **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे** (2002) आदि। इसके अलावा उपन्यास **आखिरी कलाम**, **निष्कासन**, **नमो अंधकार**; कविता संग्रह **अपनी शताब्दी के नाम**, **एक और भी आदमी है**; नाटक **यमगाथा**; आलोचना **निराला: आत्महंता आस्था**; और संस्मरण **लौट आ, ओ धार** प्रमुख हैं। उन्हें भारतेन्दु हरिश्चंद्र सम्मान, शरद जोशी स्मृति सम्मान, कथाक्रम सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।

दूधनाथ सिंह की कहानियाँ साठोत्तरी दौर की विशेषताओं—मध्यवर्गीय अलगाव, संबंधों का अंधेरा, समय की व्यर्थता और अस्तित्व की अर्थहीनता—को प्रतिबिंबित करती हैं। वे अकहानी आंदोलन के पक्षधर के रूप में उभरे, जहाँ कहानी 'कहानी' होने से अधिक 'अकहानी' बन जाती है—अर्थात् बाहरी घटनाओं से अधिक आंतरिक संघर्ष और विडंबना पर जोर। उनकी रचनाएँ व्यक्तिवादी-अस्तित्ववादी दृष्टि से युक्त हैं, लेकिन साथ ही सामाजिक विडंबना और दलित-शोषित संवेदना भी झलकती है।

इस शोध पत्र का मूल समस्या-कथन यह है कि आर्थिक-सामाजिक प्रगति और शहरीकरण के बावजूद मध्यवर्गीय व्यक्ति में गहराता आंतरिक खालीपन, संबंधों का क्षय और अस्तित्ववादी संकट आज भी प्रासंगिक है। दूधनाथ सिंह की कहानियाँ इस संकट को 1960-70 के दशक में ही उजागर करती हैं, जो समकालीन विमर्श—जैसे **सार्व का "अस्तित्व सार से पहले है"** उत्तर-आधुनिक अलगाव—के साथ जोड़कर देखी जा सकती हैं।

इस शोध का उद्देश्य है:

- दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य में मध्यवर्गीय अलगाव और अस्तित्ववादी संकट का समकालीन विमर्श के संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन करना।
- प्रमुख कहानियाँ जैसे 'सुखांत', 'चूहेदानी', 'रीछ', 'नपनी' आदि के माध्यम से इन थीमों का विश्लेषण करना।
- उनके लेखन को अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण और उत्तर-आधुनिकता के सैद्धांतिक आधार पर देखना।

शोध विधि मुख्यतः पाठ-विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक है, जिसमें मूल रचनाओं के अंशों का प्रयोग किया जाएगा। राजीव कुमार के आलेख **"समय और संबंध का अंधेरा: दूधनाथ सिंह की साठोत्तरी दौर की कहानियाँ"** जैसे द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया जाएगा, जो दूधनाथ सिंह के लेखन में समय-संबंध के अंधेरे को प्रमुखता से रेखांकित करता है।

यह अध्ययन न केवल दूधनाथ सिंह के योगदान को पुनः स्थापित करता है, बल्कि समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में उनकी प्रासंगिकता को भी उजागर करता है, जहाँ डिजिटल युग का अलगाव और मानसिक स्वास्थ्य संकट इन थीमों को और गहरा बनाता है।

मुख्य विश्लेषण -

दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य में **मध्यवर्गीय अलगाव** और **अस्तित्ववादी संकट** की थीमें गहन रूप से उभरती हैं। उनका लेखन साठोत्तरी दौर की विडंबनाओं को व्यक्तिवादी दृष्टि से प्रस्तुत करता है, जहाँ बाहरी सफलता या सामाजिक स्थिति के बावजूद व्यक्ति आंतरिक खालीपन, संबंधों के क्षय और जीवन की अर्थहीनता से जूझता है। यहाँ हम **समकालीन विमर्श** के प्रमुख सिद्धांतों—**सार्व** की **उल्टी**(nausea) और **कामू** की **व्यर्थता** (absurd)—के साथ उनकी प्रमुख कहानियों का विश्लेषण करेंगे। ये सिद्धांत हिंदी में क्रमशः उल्टी (जीवन की घिनौनी बेचैनी) और व्यर्थता (जीवन की निरर्थकता) के रूप में समझे जाते हैं।

6.1 मध्यवर्गीय अलगाव का चित्रण

मध्यवर्गीय जीवन में आर्थिक प्रगति के बावजूद सामाजिक-व्यक्तिगत अलगाव प्रमुख है। दूधनाथ सिंह इसे सूक्ष्म व्यंग्य और मनोवैज्ञानिक गहराई से दिखाते हैं।

चूहेदानी- में पात्र होटल के कमरे में अकेला है। यात्रा के दौरान वह अपने परिवार से दूर है, और कमरे में रखी पुरानी चूहेदानी में फँसी सूखी चूहिया उसका प्रतीक बन जाती है। अंशः -

"एक चूहिया महीनों पहले, शायद चूहेदानी में फँस गई थी। उसका शरीर एकदम सूखकर काँटा हो गया था। चूहेदानी की सींखचों पर अपने अगले दो पैरों को रखकर थूथने को बाहर निकालते हुए उसने निकलने की बहुत कोशिश की होगी, लेकिन उसी मुद्रा में लड़ते-लड़ते वह सूख गई।...चूहेदानी के बाहर एक बड़ा-सा चूहा सशंक नेत्रों से कभी उसकी ओर देखता और कभी अपने दोनों अगले पाँव ऊपर उठाकर अपने थूथन से चूहिया का थूथन हिलाता..."¹

यहाँ चूहिया का फँसना और सूखना मध्यवर्गीय व्यक्ति के यांत्रिक, फँसे हुए जीवन का प्रतीक है—बाहर से देखने वाला (बड़ा चूहा) भी मदद नहीं कर पाता, बल्कि सिर्फ देखता रहता है। यह अलगाव फ्रायडीय alienation से जुड़ता है, जहाँ व्यक्ति अपनी जड़ों से कट जाता है।

अस्तित्ववादी संकट और समय-संबंध का अंधेरा-

दूधनाथ सिंह की कहानियाँ समय की व्यर्थता और संबंधों के अंधेरे को केंद्र में रखती हैं, जो सार्त्र की उल्टी —जीवन की घिनौनी, अर्थहीन बेचैनी—और कामू की व्यर्थता —जीवन में कोई अंतर्निहित अर्थ न होना—से मेल खाती हैं।

- 'सुखांत' में पात्र आंतरिक दुविधा से गुजरता है, जहाँ सुख की खोज व्यर्थ साबित होती है। अंश:

"मेरी तबीयत खराब है? मुझे क्या हुआ है..."¹²

यहाँ पात्र का जीवन सार्त्र की उल्टी जैसा है—संसार की वस्तुओं और संबंधों से घिन पैदा होना, क्योंकि वे अर्थहीन लगते हैं। संबंध टूटते हैं, समय व्यर्थ बीतता है, और अस्तित्व संकट में पड़ जाता है। कामू की व्यर्थता भी यहाँ झलकती है—जीवन में कोई पूर्वनिर्धारित अर्थ नहीं, सब व्यर्थ। राजीव कुमार लिखते हैं कि दूधनाथ सिंह की कहानियों में "समय और संबंध का अंधेरा" चरम पर है, जहाँ व्यक्ति सार्थकता की खोज में व्यर्थता से टकराता है।¹³

'रीछ' और 'नपनी' में विडंबना और अलगाव

- 'रीछ' में पात्र का अकेलापन और सामाजिक दबाव से अलगाव उभरता है। कहानी में एक पालतू रीछ (भालू) के साथ संघर्ष है, जो अंततः व्यक्ति के भीतर के जानवर (अस्तित्ववादी संघर्ष) का प्रतीक बनता है। यह उल्टी (absurd) की स्थिति है—पालतू बनाया गया जानवर विद्रोह करता है, जैसे जीवन की व्यर्थता विद्रोह करती है। व्यक्ति की लाचारी और अकेलापन कामू की उल्टी से जुड़ता है, जहाँ मनुष्य बिना कारण के संघर्ष करता है।¹⁴

- 'नपनी' में मध्यवर्गीय दहेज-प्रथा और स्त्री को वस्तु बनाने की सोच पर व्यंग्य है। अंश:

"तुम्हें भइआ ने फीते से ठीक से नापा था न?... नपनी पास आकर खड़ी हुई - एक साँवली सी, दुबली सी, मरी-मरी लड़की।" ⁵

लड़की की "नाप" (माप) अलगाव का प्रतीक है—वह व्यक्ति नहीं, वस्तु है। यह मध्यवर्गीय समाज की विडंबना है, जहाँ संबंध बाजार हो जाते हैं, और व्यक्ति सार्त्र की उल्टी महसूस करता है—संसार की वस्तुकरण से घिन।¹⁶

समकालीन प्रासंगिकता

दूधनाथ सिंह का लेखन आज के डिजिटल अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य संकट और संबंधों के क्षय से जुड़ता है। उनकी कहानियाँ व्यर्थता (absurd) और उल्टी (nausea) को हिंदी संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं—व्यक्ति सार्थकता ढूँढता है, लेकिन व्यर्थता से टकराता है। यह समकालीन विमर्श में उनकी प्रासंगिकता बढ़ाता है, जहाँ अस्तित्व का संकट वैश्विक हो गया है।

निष्कर्ष -

दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य साठोत्तरी हिंदी कहानी के सबसे महत्वपूर्ण और गहन योगदानों में से एक है, जो मध्यवर्गीय जीवन की आंतरिक विडंबनाओं, गहरे अलगाव और अस्तित्ववादी संकट को अत्यंत सूक्ष्मता, व्यंग्य और मनोविश्लेषणात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि उनकी कहानियाँ केवल व्यक्तिवादी अनुभूति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समकालीन विमर्श—विशेषकर सार्त्र की उल्टी (जीवन की घिनौनी, अर्थहीन बेचैनी) और कामू की व्यर्थता (जीवन की निरर्थकता)—के साथ गहराई से संनादित हैं।

प्रमुख कहानियों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष उभरकर सामने आते हैं:

1. मध्यवर्गीय अलगाव का चरम चित्रण

'चूहेदानी', 'रीछ', 'नपनी' जैसी कहानियों में दूधनाथ सिंह ने मध्यवर्गीय व्यक्ति के यांत्रिक, फँसे हुए और संबंध-शून्य जीवन को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। चूहेदानी में फँसी सूखी चूहिया, नपनी की लंबाई नापने की प्रक्रिया, और रीछ के साथ पात्र का संघर्ष—ये सभी प्रतीक मध्यवर्गीय व्यक्ति के बाहरी सफलता के बावजूद आंतरिक खालीपन और सामाजिक-व्यक्तिगत अलगाव को रेखांकित करते हैं।

2. अस्तित्ववादी संकट और समय-संबंध का अंधेरा

'सुखांत' में पात्र की आंतरिक दुविधा ("मेरी तबीयत खराब है? मुझे क्या हुआ है...") सार्त्र की उल्टी की स्थिति को प्रतिबिंबित करती है,

जहाँ जीवन और संबंध अर्थहीन लगने लगते हैं। समय का व्यर्थ बीतना और संबंधों का क्रमिक क्षय कामू की व्यर्थता के सिद्धांत से जुड़ा है—जहाँ जीवन में कोई पूर्वनिर्धारित अर्थ नहीं रह जाता और व्यक्ति निरर्थकता के साथ निरंतर संघर्ष करता है।

3. समकालीन विमर्श में प्रासंगिकता

दूधनाथ सिंह का लेखन 1960-70 के दशक का होने के बावजूद आज के डिजिटल युग में अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में बढ़ता डिजिटल अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य संकट, संबंधों का क्षय, और अस्तित्व की अर्थहीनता की भावना उनकी कहानियों में पहले से ही मौजूद थी। उनका व्यंग्य और सूक्ष्म मनोविश्लेषण आज के मध्यवर्गीय व्यक्ति की स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होता है।

4. हिंदी कथा-साहित्य में योगदान

दूधनाथ सिंह ने अकहानी आंदोलन के माध्यम से कहानी को न केवल रूपगत नवीनता प्रदान की, बल्कि उसे गहन अस्तित्ववादी और मनोवैज्ञानिक स्तर पर ले गए। उनका लेखन व्यक्तिवाद और सामाजिक विडंबना के बीच संतुलन बनाता है, जो हिंदी कथा-साहित्य में दुर्लभ है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य मध्यवर्गीय अलगाव को **अस्तित्ववादी संकट** के रूप में स्थापित करता है और सार्थकता की खोज में बार-बार व्यर्थता से टकराने की प्रक्रिया को उजागर करता है। उनका लेखन न केवल साठोत्तरी दौर का दस्तावेज है, बल्कि समकालीन मानवीय स्थिति का एक जीवंत और प्रासंगिक प्रतिबिंब भी है। यह अध्ययन उनके कथा-साहित्य को समकालीन विमर्शों (अस्तित्ववाद, उत्तर-आधुनिकता, मनोविश्लेषण) के साथ जोड़कर एक नया आयाम प्रदान करता है।

आगे की संभावनाएँ-

- दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य का वर्तमान हिंदी कथाकारों (उदय प्रकाश, गीतांजलि श्री, अलका सरावगी आदि) के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

- उनके लेखन में स्त्री-चरित्रों और लैंगिक विमर्श का समकालीन फेमिनिस्ट दृष्टि से पुनर्मूल्यांकन।

- उनके कथा-साहित्य में पर्यावरणीय और शहरी संकट के तत्वों का इको-क्रिटिकल विश्लेषण।

इस प्रकार, दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य हिंदी साहित्य में एक ऐसा मील का पत्थर है जो समय की कसौटी पर आज भी खरा उतरता है और मानवीय अस्तित्व के गहन प्रश्नों को उठाता रहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. सिंह, दूधनाथ. (1972). चूहेदानी. *सुखांत* (कहानी संग्रह). राजकमल प्रकाशन.
2. सिंह, दूधनाथ. (1972). सुखांत. *सुखांत* (कहानी संग्रह). राजकमल प्रकाशन.
3. कुमार, राजीव. समय और संबंध का अँधेरा: दूधनाथ सिंह की साठोत्तरी दौर की कहानियाँ. *हिन्दी समय*.
<https://www.hindisamay.com/content/11095/1/...>
4. सिंह, दूधनाथ. (1967). रीछ. *सपाट चेहरे वाला आदमी* (कहानी संग्रह). राजकमल प्रकाशन.
5. सिंह, दूधनाथ. नपनी. *प्रेमकथा का अंत न कोई* या अन्य संग्रह.
6. INSPIRA Research Journals. दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक स्वरूप.